एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 03 (मई-जून, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

बहुउपयोगी औषधीय लता है गिलोय

*सीता चौधरी[1], शिवम्[2], मेघा जैमिनी[3], डॉ. कोमल कथूरिया[4] एवं डॉ. राहुल भारद्वाज[5]
[1]उद्यान विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय, जोधपुर, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर
[2]उद्यान विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय, जोधपुर, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर
[3]पादप रोगविज्ञान, कृषि महाविद्यालय, जोधपुर, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर
[4]सहायक आचार्य, उद्यानिकी, कृषि महाविद्यालय, श्रीगंगानगर
[5]सहायक आचार्य (आनुवंशिकी और पादप प्रजनन), कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: choudharysita070@gmail.com

गिलोय एक प्रसिद्ध औषधीय पौधा है जिसे आयुर्वेद में अमृता के नाम से भी जाना जाता है। वर्तमान समय में औषधीय पौधों की बढ़ती मांग के कारण गिलोय की खेती किसानों के लिए आय का एक अच्छा स्रोत बन सकती है। कम देखभालए सरल उत्पादन तकनीक और बाजार में स्थिर मांग के कारण यह पौधा कृषि विविधीकरण और औषधीय खेती को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। औषधीय दृष्टि से गिलोय का महत्व बहुत अधिक है। इसमें एंटीऑक्सीडेंटए एंटीबैक्टीरियल और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले गुण पाए जाते हैं। यह बुखार मधुमेह पाचन संबंधी समस्याओं और त्वचा रोगों में लाभकारी मानी जाती है।कोविड.19 के दौरान भी गिलोय की मांग में काफी वृद्धि देखी गई थी।

यह एक बहुवर्षीय पतली एवं लचीली लता होती है जो सहारे के रूप में वृक्षों या संरचनाओं पर चढ़कर बढ़ती है। भारत में यह प्राकृतिक रूप से जंगलों खेतों की मेड़ों और बगीचों में पाई जाती है। औषधीय गुणों के कारण गिलोय का उपयोग पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में लंबे समय से किया जा रहा है। गिलोय की पहचान इसके मोटे हरे और गांठदार तनों तथा हृदयाकार पत्तियों से की जा सकती है। इसके तनों में स्टार्च की मात्रा अधिक होती है जो औषधीय दृष्टि से उपयोगी मानी जाती है। इसमें रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले तत्व एंटीऑक्सीडेंट और सूजनरोधी गुण पाए जाते हैं। इसका उपयोग बुखार मधुमेह पाचन विकार त्वचा रोग और सामान्य कमजोरी के उपचार में किया जाता है। आयुर्वेदिक औषधि काढ़े और स्वास्थ्यवर्धक उत्पादों में गिलोय का व्यापक उपयोग होता है।

वर्तमान में हर्बल उत्पादों और आयुर्वेदिक दवाइओं की बढ़ती मांग को देखते हुए गिलोय की व्यावसायिक खेती किसानों के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकती है। कम देखभाल कम लागत और स्थिर बाजार मांग के कारण यह औषधीय फसलें कृषि विविधीकरण का एक अच्छा उदाहरण है। सूजनरोधी गुण पाए जाते हैं। इसका उपयोग बुखार, मधुमेह, पाचन विकार, त्वचा रोग और सामान्य कमजोरी के उपचार में किया जाता है। आयुर्वेदिक औषधि, काढ़े और एंटीऑक्सीडेंट, एंटीबैक्टीरियल और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले गुण पाए जाते हैं। यह बुखार, मधुमेह, पाचन संबंधी समस्याओं और त्वचा रोगों में लाभकारी मानी जाती है। कम देखभाल, कम लागत और स्थिर बाजार मांग के कारण यह औषधीय फसल कृषि विविधीकरण का एक अच्छा उदाहरण है।